2 तीमुथियुस

पौलुस का तीमुथियुस (तिमोथी) को लिखा गया दूसरा पत्र

लेखक:

यीशु मसीह का प्रेरित पौलुस

दिनांक:

67 ईस्वी के आस-पास।

विषय:

यीशु के सुसमाचार को सुनाने के कारण पौलुस को सताया गया और जेल में डाला गया (1:15; 4:16)। वह जानता था कि उसकी मौत का समय निकट था (4:6)। ऐसी परिस्थितियों (हालातों) में जब वह बहुत हताश और निराश हो सकता था, वह डरा नहीं, न ही हारा। इसके विपरीत वह साहसी था। वह तीमु. को अपनी आशा और भरोसे के बारे में बताने के साथ मसीही सेवा में बने रहने के लिए उत्साहित करता है। परमेश्वर के आत्मा की सहायता से वह भविष्य के लोगों की स्थिति बतलाता है। वह सही सिद्धान्त, सही शिक्षा, पवित्र जीवन, ईमानदारी के जीवन और साहस से संदेश दिए जाने की आवश्यकता पर ज़ोर डालता है।

1 पौलुस की ओर से जो उस जीवन की
प्रतिज्ञा के अनुसार जो यीशु मसीह में
है, परमेश्वर की इच्छा से यीशु का प्रेरित
(भेजा हुआ) है,

2मेरे अति प्रिय बेटे तिमोथी, तुम्हें
परमेश्वर पिता और यीशु मसीह की ओर
से अनुग्रह दया और शान्ति मिले।

3मैं अपने उस परमेश्वर का आभारी हूँ,
जिसकी सेवा मैं शुद्ध विवेकों से करता हूँ
जैसी मेरे पूर्वज ने की। मैं रात-दिन अपनी
प्रार्थनाओं में तुम्हें निरन्तर याद करता हूँ।
4तुम्हारे आँसुओं को याद करने पर मेरे
भीतर बड़ी लालसा होती है, कि मैं तुम्हें
देखकर खुशी से भर जाऊँ। 5जो विश्वास
पहले तुम्हारी नानी लोइस और माँ यूनिस
में था और जिसकी याद मुझे आती है, मैं
निश्चित हूँ कि वही सच्चा विश्वास तुम में
है। 6मेरे हाथों के तुम्हारे सिर पर रखे जाने
से जो वरदान तुम्हें मिला था, मैं उसे याद
दिलाना चाहता हूँ कि तुम्हें अपने जीवन
में परमेश्वर के उस वरदान को चमकाने
की ज़रूरत है। 7क्योंकि परमेश्वर ने हमें
डर की नहीं किन्तु शक्ति (सामर्थ), प्यार
और संयम (ठण्डे दिमाग) की आत्मा दी है।

8यीशु की और मुझ कैदी की गवाही से
तुम शर्मिन्दा न हो, किन्तु परमेश्वर की

1:1 रोमि. 1:1; गल. 1:1 "अनुसार" सब से बढ़कर पौलुस की प्रेरिताई जिस बात के लिए थी वह हैः यह सच्चाई कि सृजनहार परमेश्वर ने अनन्त जीवन की प्रतिज्ञा उनके लिए की, जिन्होंने मसीह पर विश्वास किया था (तुलना करें रोमि. 1:2; तीतुस 1:2; 1 यूहन्ना 5:9-12)

1:2 1 तीमु. 1:2.

1:3 "परमेश्वर का आभारी हूँ"- रोमि. 1:8; 1 कुरि. 1:4; फ़िलि. 1:3; कुल. 1:3; 1 थिस्स. 1:2.

"शुद्ध विवेक"- प्रे.काम 23:1; 24:16; 1 कुरि. 4:4; 2 कुरि. 1:12.

"पूर्वज"- ओल्ड टॅस्टामॅन्ट में याहवे के सेवक। पौलुस यह संकेत करता है कि सच्चे मत और सेवा की जड़ें वहीं हैं। उसके विश्वास और सेवा का सम्बन्ध उन्हीं से है।

"रात-दिन"- (पौलुस जेल में था पद 8) लेकिन उसकी सेवा बन्द नहीं हुयी थी। प्रार्थना के लिए उसके पास काफ़ी समय था, जिस अवसर को उसने नहीं खोया।

1:4 "आँसू"- शायद पौलुस अपनी आखिरी बिदाई की ओर संकेत करता है। तीमु. के आँसू पौलुस के प्रति उसके प्यार को और पौलुस के अटूट विश्वास को दिखाते है। तुलना करें प्रे. काम 20:37-38.

"बड़ी लालसा"- रोमि. 1:11; 1 थिस्स. 3:6; फ़िलि. 1:8.

1:5 तीमु. का पिता और दादा यूनानी थे और शायद मसीह के मानने वाले नहीं। उसकी माँ और नानी यहूदी थे। उसकी माँ और नानी ने मसीह के संदेश पर विश्वास किया था (प्रे.काम 16:1-3)।

1:6 यहाँ वरदान का अर्थ एक पैदाईशी योग्यता से नहीं हैं, जिसे स्वर्गिक पिता ने तीमु. को किसी समय दी थी। प्रभु के सेवक ऐसी योग्यता के प्रति लापरवाह होकर उसे समाप्त कर सकते हैं। इसलिए पौलुस यहाँ हिम्मत बढ़ाता है। मण्डली के अगुवों के द्वारा रखे जाने से तीमु. ने वरदान ग्रहण किया था (1 तीमु. 4:14) हमें यह नहीं मालूम कि पौलुस उसी की ओर इशारा कर रहा है। अलग-अलग कारणों से दो बार हाथों का रखना आम बात थी। प्रे.काम 9:17; 13:3 देखें।

1:7 "डर की नहीं"- ऐसा लगता है कि इस्तेमाल के लिए साहस की कमी की वजह से इस आत्मिक योग्यता की लपटों को बुझा देने की प्रवृत्ति तीमु. में थी। स्वर्गिक पिता के वरदान के उपयोग के लिए साहस की आवश्यकता थी। (प्रे.काम 4:29; इफ़ि. 6:19)। मसीह की सेवा के लिए तीन और बातों की आवश्यकता के सम्बन्ध में कहता है। याहवे का आत्मा वह देता है। जब प्रभु हमें सेवा का निमंत्रण देते हैं, तो उसके लिए योग्यता भी देते हैं (2 कुरि. 3:5-6)।

"शक्ति"- प्रे.काम 1:8; 1 कुरि. 2:4; 4:20; 2 कुरि. 4:7; 12:9; इफ़ि. 1:19; 3:16; कुल. 1:11.

"प्यार"- बिना सामर्थ प्रेम काम नहीं करता। बिना प्रेम के शक्ति हानिकारक होगी फ़ायदेमन्द नहीं। सब से बड़ी बात जिसकी मसीह के सेवकों को आवश्यकता हैः वह है प्रेम - 1 कुरि. 13:1-3. "ठण्डे दिमाग" या शायद "संयम" । यह स्वस्थ तरीके से सोचने, विचारों को वश में करने और बर्ताव करने की योग्यता है। 1 तीमु. 3:2.

1:8 "कैदी"- 2:9; इफ़ि. 3:1.

"शर्मिन्दा"- मरकुस 8:38; रोमि. 1:16. बहुत से लोग मसीह के संदेश को बेवकूफ़ी समझते हैं

ताकत से सुसमाचार सुनाये जाने के कारण आने वाले कष्टों को मेरे साथ सहो। 9उन्हों ने हमें मुक्ति दी और पवित्र बुलाहट से बुलाया है। यह बुलाहट हमारे भले कामों के कारण नहीं, किन्तु उनके अपने उद्देश्य और अनुग्रह (शर्तहीन कृपा) के कारण थी, जो सृष्टि के बनाए जाने से पहले मसीह यीशु में हमें मिली थी। 10जिस यीशु मसीह ने सुसमाचार के द्वारा मौत को नाश किया और जीवन एवं अमरता को हमारे सामने रखा, उन्हीं मुक्तिदाता यीशु मसीह के पृथ्वी पर आने से यह (मुक्ति और पवित्र बुलाहट) अब हमारे सामने रखी है। 11गैर यहूदियों को यही सुसमाचार देने के लिए मैं एक संदेशवाहक, प्रेरित और शिक्षक ठहराया गया हूँ। 12इसी कारणवश मैं इन दुःखों को झेल रहा हूँ, फिर भी मैं शर्मिन्दगी महसूस नहीं करता हूँ, क्योंकि मैं यह जानता हूँ, कि जिन पर मैंने भरोसा किया है जो कुछ मैंने उन्हें सुपुर्द कर दिया है, उसे वह उस दिन तक संभालने के लायक हैं।

13मसीह यीशु में विश्वास और प्रेम के

(1 कुरि. 1:18,23), मसीह के क्रूस के संदेश दिए जाने से उन्हें खराब लगता है (गल. 5:11) स्वभाव से डरपोक विश्वासी घमण्ड के कारण जो आसानी से भीतर आ जाता है, दूसरों को मसीह के बारे में बताने से झिझक सकता है। सृजनहार के आत्मा की मदद से इस रवैयों से हमें बचना चाहिए।

"आने वाले कष्टों"- जो सुसमाचार देते हैं या विश्वास करते हैं, उनके कारण आने वाले दुःख - 2:3; 4:5; रोमि. 5:3; 8:17; 2 कुरि. 4:17; 1 पतर. 4:12-16.

1:9 - "पवित्र बुलाहट" रोमि. 1:6; 8:30; 1 कुरि. 1:2; इफ़ि. 1:4.

"उद्देश्य"- इफ़ि. 1:5,9,12.

"अनुग्रह"- (शर्तहीन कृपा) रोमि. 3:24; इफ़ि. 2:8-9; तीतुस 3:5-7.

"सृष्टि के बनाए जाने से पहले"- इफ़ि. 1:4; तीतुस 1:2

1:10 "मौत को नाश किया"- मत्ती 28:6; इब्रा. 2:14; यूहन्ना 5:24; 11:25-26 मसीह ने मौत को नाश किया 1 कुरि. 15:26 और विश्वासियों के लिए अनन्त जीवन का रास्ता खोल दिया - यूहन्ना 3:16; 5:24; 6:47. उन्हों ने जीवन और अमरता के सम्बन्ध में सत्य को प्रगट कर दिया है - वह सत्य जो उनके आने से पहले छिपा था। अमरता के सम्बन्ध में 1 कुरि. 15 में देखें।

"हमारे सामने रखा"- यूहन्ना 1:17.

"मसीह के"- यूहन्ना 15:4; रोमि. 6:5; 8:1; इफ़ि. 1:1,4.

1:11 1 तीमु. 2:7

1:12 पौलुस के दुख (2:9; 2 कुरि. 1:8; 4:8-12; 6:4-10; 11:23-27) इसलिए झेलने पड़े क्योंकि वह मसीह का सेवक था (यूहन्ना 15:18-21; 16:1-4)। यदि वह सेवकाई रोकता तो वे न होते। उसने ऐसा इसलिए नहीं किया क्योंकि वह मसीह के लिए दुख उठाने में शर्माता नहीं था (रोमि. 5:3; 2 कुरि. 4:17; 12:10; कुल. 1:24)।

"जिन पर मैंने भरोसा"- वह यह जानता था कि उसने क्या विश्वास किया है। यहाँ वह मसीह के बारे में व्यक्तिगत ज्ञान की बात करता है। यही सदाकाल का जीवन है (यूहन्ना 17:3) प्रभु के सभी बच्चों को यह ज्ञान है (इब्रा. 8:11)।

"सुपुर्द कर दिया है"- शायद वह अपनी बात कर रहा है। बहुत समय पहले उसने मसीह के मज़बूत हाथों में स्वयं को सौंपा था। वह निश्चित था कि पालनहार की देखरेख से कुछ भी उन्हें हटा नहीं सकता तुलना करें रोमि. 8:35-39; यूहन्ना 10:28; 1 पतर. 1:5.

"उस दिन"- मसीह का दोबारा आना।

1:13 पौलुस ने तीमु. को याहवे की सच्चाई सिखायी थी। स्वयं मसीह ने पौलुस को सिखाया था - गल. 1:11-12; इफ़ि. 3:2-3. तीमु. को अपना सिद्धान्त नहीं बनाना था। न ही हमें ऐसा करना है। सदा के लिए जो परमेश्वर ने नमूना दिया है, उसे ही अपनाना है। यदि हम वचन देते हैं सिखाते हैं हमें इसी नमूने को अपनाना और इसके अनुसार बनाना चाहिए। यदि हम ऐसा नहीं करते तो इसको बिगाड़ डालेंगे।

"मसीह...में"- पद 9

"विश्वास...प्रेम"- जीवित विश्वास के साथ हमें पौलुस की शिक्षा को पकड़े रहना है। हमारे लिए इसे मात्र कट्टरतावाद नहीं बनना चाहिए। (तुलना करें यूहन्ना 5:38-40,45-47)। हमें सत्य को प्रेम से पकड़े रहना चाहिए। यह काफ़ी नहीं कि सही सिद्धान्त हों, और हम अपने मत को जोश के साथ फैलाएं। यदि हमारे पास प्यार नहीं है, तो हम कुछ भी नहीं 1 कुरि. 13:1-3.

साथ जो सही शिक्षा तुम ने मुझ से सुनी थी, उसे मज़बूती से पकड़े रहो। 14जो अच्छी वस्तु तुम्हें सौंपी गयी थी, उसे हमारे भीतर रहने वाले पवित्र आत्मा के द्वारा संभाले रहो।

15तुम्हें मालूम है कि एशिया में सभी, यहाँ तक कि फ़ुगिलुस और हिरमुगिनेस ने भी हमें छोड़ दिया था।

16उनेसिफ़ोरस के परिवार के ऊपर यीशु कृपा करें क्योंकि कई बार उसने मेरी हिम्मत बढ़ायी और मेरे कैदी होने के कारण उसने शर्म महसूस नहीं की। 17जब वह रोम में आया, तो बहुत मेहनत करके मुझे खोजता रहा और मुझे पा भी लिया। 18प्रभु करे कि उस दिन वह परमेश्वर की दया को हासिल कर सके। तुम्हें तो मालूम है कि इफ़िसुस में उसने कई तरह से मेरी सेवा की थी।

2 इसलिए हे मेरे बेटे, मसीह यीशु में जो अनुग्रह (शर्तहीन कृपा) है, उसमें मज़बूत हो जाओ। 2अनेक गवाहों की उपस्थिति में, तुम ने जो कुछ मुझ से सुना था, उन्हीं बातों को उन विश्वास योग्य लोगों को सौंप दो, जो दूसरों को भी सुनाने के योग्य हैं। 3यीशु मसीह के अच्छे सैनिक की तरह मेरे साथ दुखों (मुश्किलों) को सहते रहो। 4ऐसा संभव ही नहीं कि एक व्यक्ति सेना में भर्ती होने के बाद आम आदमी (नागरिक) के समान जीवन बिताना

1:14 "अच्छी वस्तु"- यह यीशु का सत्य और सही शिक्षा थी। मसीह के सेवकों को इसे संभालना क्यों है? इसलिए क्योंकि कलीसिया और लोगों से कोई न कोई छीनना चाहेगा।

"भीतर रहने वाले"- रोमि. 8:9; 1 कुरि. 6:19.

"पवित्र आत्मा"- यूहन्ना 14:16-17 के नोट्स देखें। पालनहार यह नहीं चाहते कि हम उनके सत्य को अपनी बहस, समझ और बल से सुरक्षित रखें। उन्हों ने अपने सेवकों को उनकी स्वभाविक बुद्धि और बल से कहीं अधिक शक्ति दी है। तुलना करें मत्ती 10:19-20; लूका 21:15; यूहन्ना 16:13-15; प्रे.काम 4:13.

1:15 पौलुस जेल में और खतरे में था। यह शोक की बात है कि जब लोगों को उसके संकट में सहायता देनी चाहिए थी, नहीं दी (4:16)तुलना करें मत्ती 26:56 "एशिया" प्रे.काम 16:6 देखें।

1:16-18 "उनेसिफ़ोरस"- जिनका वर्णन वह 15 पद में कहरता है, उन से वह बहुत भिन्न था। उन्हों ने तरीके खोजे, जिससे पौलुस की सहायता करें उसने पौलुस को खोज निकाला ताकि मदद करें। आज भी ऐसे मसीही संसार में हैं।

"कृपा"- (पद 18) प्रभु के वचन के अनुसार ही पौलुस की इच्छा थी। मत्ती 5:7. यदि हम दूसरों की मदद नहीं करते या दयालु नहीं हैं, प्रभु से हमें दया की अपेक्षा नहीं करनी चाहिए।

2:1 आत्मिक बल स्वर्गिक पिता का वरदान है जो मसीह में सभी विश्वासियों को मिलता है। हमें यह प्राप्त करना चाहिए। (इफ़ि. 1:3,19; 3:16,20; 6:10; 2 कुरि. 12:9-10; यशा. 40:31)।

2:2 पृथ्वी पर सत्य को फैलाने का यही तरीका है जिसे सृजनहार ने चुना है। पौलुस ने तीमु. को सिखाया था (1:13) तीमु. को दूसरे लोगों और उन लोगों को अन्य लोगों को सिखाना था। तुलना करें मत्ती 28:19-20.

"विश्वास योग्य लोगों"- यह बेकार है कि महत्वपूर्ण बातों को लापरवाह लोगों को सौंपा जाए। तुलना करें मत्ती 24:45-51; 1 तीमु. 1:12; 1 कुरि. 4:1-2.

2:3 "अच्छे सैनिक"- इफ़ि. 6:11-18. मसीह की आत्मिक सेना में सभी विश्वासी सैनिक हैं। सैनिक का कर्तव्य हमें पूरा करना चाहिए। निस्संन्देह यह उनके सम्बन्ध में भी सही हैं जिन्हें अगुवा बनाया गया है। किसी भी कीमत पर हमें कठिनाईयों से बचने का प्रयत्न नहीं करना चाहिए, न ही कुड़कुड़ाना और शिकायत करना है।

"मुश्किलों"- 1:8; 3:12; यूहन्ना 16:33; प्रे. काम 14:22.

2:4 "आम आदमी के समान"- विश्वासी और सेवकाई में लगे लोग यदि अपने जीवकोपार्जन के लिए कुछ काम करे, तो कुछ बुरा नहीं। प्रे.काम 18:3; 20:34-35; 1 थिस्स. 4:11-12; 2 थिस्स. 3:7-10; तीतुस 3:14. यदि हम उन कामों में इतना फँस जाते है, कि यीशु के अच्छे सैनिक बने नहीं रहते तो यह गलत है। हमें क्या कब करना है, इस में बुद्धिमान

चाहे, ऐसे में वह अपने भर्ती करने वाले को खुश नहीं कर सकता है। 5इसी तरह से जो व्यक्ति खेल-कूद प्रतियोगिता के नियमों का पालन न करे, तो भाग लेने के बावजूद भी वह पुरस्कार प्राप्त करने के योग्य नहीं होता। 6मेहनती किसान इस बात का अधिकारी है, कि फ़सल का सब से पहला हिस्सा प्राप्त करे। 7जो मैं कह रहा हूँ, उस पर ध्यान दो। सभी बातों में यीशु तुम्हें समझ दें।

8यह याद रखो कि मेरे सु-संदेश के अनुसार दाऊद के वंश के यीशु मसीह मरे हुओं में से जिलाए गए। 9इसी सत्य को दूसरों तक पहुँचाने के कारण मैं एक अपराधी की तरह दुःख उठा रहा हूँ, यहाँ तक कि जंजीरों से बन्धा हुआ हूँ, किन्तु परमेश्वर का वचन जंजीरों से बंधा हुआ नहीं है। 10परमेश्वर के चुने हुओं के कारण मैं सब कुछ सहता हूँ, ताकि वे भी उस मुक्ति को पा सकें जो अनन्त महिमा के साथ मसीह यीशु में है।

11यह सच है कि यदि हम उनके साथ मर चुके (सज़ा भुगत चुके) हैं, तो हम उनके साथ जीवित भी रहेंगे। 12यदि हम सहते रहें, तो उनके साथ शासन भी करेंगे। यदि

होना चाहिए। हमें अपने आशा देने वाले ऑफ़ीसर (मसीह) की बात माननी है। - 2 कुरि. 5:9; गल. 1:10; कुल. 1:10; 1 थिस्स. 4:1. चाहे हम संसार के किसी कार्य में हैं हमें यह जानना है कि मसीह के मानने के लिए उन्हीं के सैनिक हैं।

2:5 "खेल-कूद प्रतियोगिता"- आत्मिक क्षेत्र में विश्वासी प्रतियोगी है -1 कुरि. 9:24-27; गल. 5:7; फ़िलि. 3:13-14; इब्रा. 12:1. जीतने वाले के लिए मुकुट हैं - 4:8; याकूब 1:12; 1 पतर. 5:4; प्रका. 2:10. आत्मिक नियम, प्रशिक्षण और अनुशासन की आवश्यकता विश्वासियों को है। यदि वे इस पर ध्यान नहीं देते तो पुरस्कार खो देंगे - 1 कुरि. 9:27; कुल. 2:18; 2 यूहन्ना 8; प्रका. 3:11.

2:6 1 कुरि. 9:10; गल. 6:9; यूहन्ना 4:36; भजन 126:5-6 । यहाँ पौलुस कठोर परिश्रम पर ज़ोर डालता है। 1 कुरि. 15:58. से तुलना करे।

2:7 किसी परमेश्वरीय ज्ञान को समझाने और लागू करने में दो बातें आवश्यक हैं। हमें सोचना है, मनन करना है। वही हमें परख और बुद्धि देगें। भजन 1:2; 1 पतर. 1:13; इफ़ि. 1:18; फ़िलि. 1:9; कुल. 1:9; याकूब 1:5 से तुलना करें।

2:8 रोमि. 1:3-4; मत्ती 28:6.

"याद रखो"- हमारे परिश्रम, आराम, आमोद प्रमोद में भूलने की संभावना है। इसलिए यह कहा गया है। व्यव. 6:12; 8:11 से मिलान करें। हमें सदा उनका ध्यान रखना है कुल. 3:1-2; इब्रा. 3:1; 12:2-3. शान्ति, शक्ति और जीत का यही तरीका है।

"मेरे सु-संदेश"- रोमि. 2:16; 16:25; 1 कुरि. 15:1-4.

2:9 देखें 1:12. एक गलती जिसमें सुसमाचार के विरोधी गिर जाते हैं, वह यही है। वे सोचते हैं कि यीशु के सेवकों को बन्द करने से उन्हों ने परमेश्वर के वचन को कैद कर दिया। या उनको नाश करने पर वचन को समाप्त कर दिया। ऐसा तरीकों से, सच पूछें, तो सुसमाचार और अधिक फैलता है (फ़िलि. 1:12-14; प्रे.काम 8:3-4)। एक बीज उत्पन्न करने वाले पौधे को मारने से बीज फैलते हैं।

2:10 पौलुस स्वयं के लिए नहीं जिया न उसने दुःखों को अपने लिए सहा, बल्कि मसीह के लिए। 1 कुरि. 9:19-23; 10:33—11:1; प्रे.काम 20:24 से तुलना करें।

"चुने हुओं"- मत्ती 24:22; 24:31; रोमि. 11:7; तीतुस 1:1. यहाँ पौलुस का मतलब उन से है जिनको स्वर्गिक पिता ने मुक्ति के लिए चुना है, किन्तु वे अभी तक उनके राज्य में आए नहीं हैं। यूहन्ना 6:37; रोमि. 8:29; इफ़ि. 1:4; 1 पतर. 1:1-2 से तुलना करे।

"अनन्त महिमा"- यूहन्ना 17:5,24; रोमि. 5:2; 8:17-18.

2:11 "मर चुके है"- रोमि. 6:2-8; गल. 2:20.

2:12 "सहते रहें"- पद 10; मत्ती 10:22; 24:13; रोमि. 12:12; 1 कुरि. 13:7 - यूनानी शब्द का अर्थ है धीरज या साहस। धीरज और साहस से सहते रहना सच्चे विश्वास का प्रमाण है।

"शासन"- मत्ती 19:28; लूका 1:33; प्रका. 5:10; 20:6; 22:5. यह प्रतिज्ञा उन से नहीं की गयी है जो मसीह के लिए कठिनाई सहने के लिए तैयार नहीं है।

हम उनका इन्कार करें तो वह भी हमारा इन्कार करेंगे। 13यदि हम भरोसेमन्द न भी रहें, तौभी वह भरोसेमंद हैं, वह स्वयं अपना इन्कार नहीं कर सकते।

14इन बातों को उन्हें याद दिलाओ और गंभीरता से प्रभु यीशु की उपस्थिति में ऐलान करो, कि वे शब्दों के बारे में झगड़ा न करें। क्योंकि उससे कोई लाभ नहीं है और सुनने वालों को बर्बाद करते हैं। 15इस तरह का हर संभव प्रयत्न करो कि खुद को परमेश्वर के सामने ऐसे पेश करो जैसा उन्हें कबूल है। एक ऐसे कार्यकर्ता बनो जो सच्चाई के वचन का सही इस्तेमाल करे और इस से शर्मिन्दा न हो। 16बेकार की बकबक से बचो, क्योंकि इस से लोग और अधिक भ्रष्ट होते जाएँगे। 17उनकी शिक्षा कैन्सर के समान फैलती जाएगी। इन्हीं में से हिमुनयुस और फ़िलेतुस भी हैं। 18यह कह कर कि मरे हुए जीवित हो चुके हैं, वे सत्य से दूर हो गए हैं और लोगों के विश्वास को डगमगा रहे हैं। 19वे सत्य से दूर हो गए हैं। चाहे कुछ भी हो, परमेश्वर

"इन्कार"- मत्ती 10:33; लूका 12:9. यहाँ पतरस के समान इन्कार की बात नहीं है लेकिन (मत्ती 26:34,75), इसका अर्थ इन्कार का जीवन।

2:13 रोमि. 3:3-4; भजन 57:10; 89:1,8,14,33; 117:2; तीतुस 1:2 । विश्वासी को मुक्ति की आशा परमेश्वर की विश्वासयोग्यता पर है, स्वयं उसकी नहीं। प्रभु महान अपने स्वभाव और वचन के विरोध के कार्य नहीं करते।

2:14 यहाँ एक पास्टर या शिक्ष्क की दो ज़िम्मेदारियाँ है - याद दिलाना ओर चेतावनी देना। प्रभु महान के लोगों को दोनों की ज़रूरत है। प्रे.काम 20:31; रोमि. 15:15; 1 कुरि. 4:14; 15:1; गल. 5:21; 2 थिस्स. 3:15; 2 पतर. 1:12-13,15; 3:1.

"शब्दों के बारे में झगड़े"- कुछ शब्द बहुत आवश्यक हैं - याहवे, मसीह, सत्य, विश्वास, प्रेम, मुक्ति आदि। ये शब्द जिन सच्चाईयों को प्रगट करते हैं, उनके लिए मरना उचित है। यह निश्चित है कि यह छोटी बातों पर झगड़ना है, पद 23; 4:4; 1 तीमु. 1:4; 4:7; 6:4. बड़े विषयों पर भी परमेश्वर के सेवकों को झगड़ना नहीं हैं (पद 24,25) हालाँकि उन्हें उन विषयों पर जोश के साथ कहना चाहिए और दैविय शक्ति से उनके पक्ष में बोलना चाहिए।

2:15 यहाँ प्रत्येक पास्टर, संदेश देने वाले शिक्षक के लिए उत्तम निर्देश है।

"सच्चाई के वचन"- इफ़ि. 1:13 और कुल. 1:5 में पौलुस इसे मसीह का सुसमाचार कहता है। यहाँ वह या तो उस की ओर इशारा करता है या पूरे वचन में पालनहार के सत्य की ओर। परमेश्वर के सत्य को अच्छे से समझें और सिखाएँ। प्रभु ने हमें यह सर्वोत्तम वस्तु दी है, और परिश्रम के साथ अध्ययन किया जाना चाहिए।

"सही"- रोमि. 16:10; 1 कुरि. 11:19; 2 कुरि. 10:18; गल. 1:10; 1 थिस्स. 2:4.

"सही इस्तेमाल करें"- यूनानी में इसके लिए एक ही शब्द है। आरम्भ में इसका अर्थ था, सीधा काटना, लेकिन बाद में हो गया-सही रीति से किसी बात से निपटना।

"शर्मिन्दा"- यदि मसीह का कोई सेवक आलस्य एवं लापरवाही के कारण रद्दी कार्य करता है तो वह परमेश्वर की प्रशंसा नहीं पाएगा। हमारे काम को अच्छी तरह से परख जाएगा - 1 कुरि. 3:12-15. हमें सब कुछ इस तरह करना चाहिए, कि परमेश्वर के साम्हने खड़े रहने के समय लज्जित न होना पड़े।

2:16 पद 14; 1 तीमु. 1:6; 6:20.

2:17 "कैन्सर"- यह शरीर के तन्तुओं का नष्ट होना है ऐसे में जब खून का बहाव रूक जाता है। इसके बढ़ने से शरीर के अंग को काट कर फ़ेंकना भी पड़ सकता है यदि ध्यान न दिया जाए तो पूरे शरीर को नुकसान पहुँचता है। इसलिए इसके बढ़ने की अनुमति नहीं देनी चाहिए। यदि एक चर्च में इसे बढ़ने दिया जाएगा तो आत्मिक मौत की सी हालत उत्पन्न हो जाएगी।

2:18 "सत्य से दूर हो गए हैं"- 1 तीमु. 1:6,19,20; 6:10,21. भविष्य में मरे हुओं का जी उठना मसीह और प्रेरितों की स्पष्ट शिक्षा है - यूहन्ना 5:28-29; 1 कुरि. 15:20-23. यह कहकर कि जी उठना हो चुका है, इस शिक्षा से इन्कार कर रहे थे।

"डगमगा रहे हैं"- झूठे शिक्षक काफ़ी गड़बड़ी उत्पन्न कर रहे थे और कुछ मसीही समझ नहीं पा रहे थे, कि क्या करें किन्तु यदि उनका विश्वास खरा था, तो नष्ट नहीं हो सकता था। वे कह रहे थे कि जी उठना केवल आत्मिक है - वर्तमान में मनुष्य की आत्मा का जीवित किया जाना,

की मुहर इस नींव के साथ बनी हुयी है, कि "परमेश्वर अपने लोगों को पहचानते हैं "तथा" जो कोई मसीह का नाम लेता है, वह दुष्टता से दूर रहे।"

20एक बड़े घर में मात्र सोने और चान्दी के बर्तन ही नहीं होते हैं, किन्तु लकड़ी और मिट्टी के भी होते हैं। कुछ खास इस्तेमाल के और कुछ मामूली इस्तेमाल के लिए। 21इसलिए जो व्यक्ति अपने आपको ऊपर बताए अनादर का पात्र होने से शुद्ध करेगा, वह अपने मालिक के लिए शुद्ध, उपयोगी और हर एक अच्छे काम के लिए तैयार आदर का पात्र होगा।

22अपनी जवानी की इच्छाओं पर लगाम लगाओ और जो लोग शुद्ध मन से यीशु से प्रार्थना करते हैं, उनके साथ मिलकर ईमानदारी, विश्वास, प्रेम और शान्ति के पीछे लगे रहो। 23यह जानते हुए कि मूर्खता और नासमझदारी की बकवास से झगड़े होते हैं। इन बातों से बचो। 24मसीह के सेवक को झगड़ालू होने के बजाए दयालु, सिखाने लायक और धीरज वाला होना चाहिए। 25अपने विरोधियों को नम्रता से सिखाना चाहिए कि शायद परमेश्वर उन्हें मन बदलने का मौका दें ताकि वे सच्चाई की पूरी पहचान कर सकें। 26हो सकता

न कि भविष्य में उनकी देह का जी उठना।

2:19 झूठे शिक्षक कुछ भी क्यों न करें, वे मसीह की सच्ची कलीसिया और लोगों को नाश नहीं कर सकते। याहवे जानते हैं कि कैसे नींव को मजबूत और अपने लोगों को विश्वास में रखें। मत्ती 16:18; लूका 22:31,33; 1 पतर. 1:4-5; 2 पतर. 2:9.

"इस"- यूहन्ना 6:37; 17:6; 1 कुरि. 6:19-20.

"दूर रहे"- यदि एक न्यायी दुष्टता करता है और बुरा करता है, तो उसके विश्वास पर प्रश्न उठता है। रोमि. 8:13-14; 1 कुरि. 6:9; गल. 5:24; इफ़ि. 5:5-6; 1 यूहन्ना 2:4,6; 3:9-10.

2:20-21 संसार में दिखने वाली कलीसिया (चर्च) में भिन्न-भिन्न प्रकार के लोग हैं, वे कुछ यीशु के हैं और यीशु उन्हें पहचानते हैं। (मत्ती 13:24-30,36-43,47-50 से तुलना करें) यहाँ पौलुस दो प्रकार के लोगों की तुलना घर के दो प्रकार के बर्तनों से करता है। रोमि. 9:21 से मिलाए। पिछले पदों में पौलुस झूठे शिक्षकों और दुष्टता को छोड़ने की आवश्यकता पर जोर दे रहा था। झूठे शिक्षक और वे जो कलीसिया में बुरे कार्य करते हैं, असम्मानीय हैं (3:5)। यदि हम वैसे आदर के बर्तन बनना चाहते हैं जैसा चाहते हैं, हमें वह करना चाहिए जो वे करने के लिए कहते हैं। यदि हम नहीं करते, तो हम भ्रष्ट होने के खतरे में हैं। 1 कुरि. 15:33.

2:22 1 तीमु. 6:11; 2 पतर. 1:3-9 देखें। कुछ बातों की ओर हमें भागना चाहिए। नौजवानों में कुछ गंदी इच्छाएँ बहुत तेज होती हैं। उन से बचने का सब से अच्छा तरीका है कि जहाँ उनकी सन्तुष्टि की संभावना है, वहाँ से भागें और जहाँ वे प्रगट हों, वहाँ से हट जाएं।

"शुद्ध मन"- मत्ती 5:8.

2:23 पद 14,16 अपने लक्ष्य से सर्वशक्तिमान के सेवकों को हटना नहीं चाहिए और झगड़ना तो बिल्कुल नहीं चाहिए।

2:24 "झगड़ालू होने के बजाए"- यूनानी शब्द प्रे.काम 7:26 में "झगड़ा" - है। जहाँ दूसरे के मुँह को बन्द करने की बात है उस से परमेश्वर का काम बढ़ता नहीं है। हालाँकि सत्य के लिए खड़े होने और लोगों को जीतने के लिए बातचीत करना अच्छा और आवश्यक है। किन्तु हम सतर्क रहें कि यह सब झगड़े में न बदल जाए। हमारा युद्ध मनुष्यों के खिलाफ़ नहीं, शैतान के खिलाफ़ है। इफ़ि. 6:12.

"सिखाने"- 1 तीमु. 3:2.

"धीरज वाला"- प्रायः विरोधी कठोर, आपत्तिजनक और अनुचित बातें कहते और छींटा- कसी करते हैं। ऐसी बातों को मसीह के सेवकों को धीरज और प्रेम से सह लेना चाहिए।

2:25 "नम्रता से"- मत्ती 11:29 से तुलना करें। यदि सत्य के विरोधी दीनता और सज्जनता से दिए गए निर्देशों को नहीं सुनते, हों लो और किसी तरीके से भी वे नहीं सुनेंगे। जब मसीह के सेवक सिखाते हैं तो विरोधियों के प्रति उनका रूख कैसा होना चाहिए। यह भी देखें कि सृष्टिकर्ता लोगों को योग्य करते हैं कि वे मन बदलने का फ़ैसला लें। हमारे तर्क-वितर्क और शिक्षा उन्हें नहीं बदले सकती (प्रे.काम 5:31) यीशु के सत्य को समझने के लिए मात्र मन बदलना आवश्यक है।

है अभी वे शैतान की इच्छा पूरी करने के लिए उसके जाल में फँसे हैं, लेकिन वे होश में आकर शैतान के जाल से छूट जाएँ जिसमें उसने उन्हें कैद कर रखा है।

3 यह भी जान लो, कि अन्त के दिनों में बहुत विपत्ति के दिन आयेंगे। 2लोग स्वयं से प्रेम करने वाले और धन के लोभी, अपनी ही डींग हाँकने वाले, घमण्डी, परमेश्वर के विरोध में कहने वाले, माता-पिता की बात टालने वाले, धन्यवाद न देने वाले और अशुद्ध, 3स्वभाविक प्रेम रहित, क्षमा न करने वाले, बदनामी करने वाले, बिना सयंम के, निर्दयी और अच्छाई के विरोधी होंगे। 4विश्वासघाती, ज़िद्दी, घमण्डी और परमेश्वर को चाहने के बजाए सुखविलास की खोज करने वाले होंगे। 5धर्मी दिखेंगे, किन्तु इसकी शक्ति का इन्कार करने वाले होंगे। ऐसे लोगों से दूर रहना।

2:26 "होश में आकर"- लूका 15:17 से तुलना करें। जो लोग मसीह के संदेश का विरोध करते हैं वे आत्मिक रीति से दिमाग से सरके हुए हैं (सभो. 9:3 से तुलना करें)। अपने कल्याण के खिलाफ़ वे बेवकूफ़ी का व्यवहार करते हैं। ऐसा इसलिए है क्योंकि शैतान ने उन्हें गुलाम बना लिया है और उन्हों ने उसके झूठ को अपना लिया है। (यूहन्ना 8:44; प्रे.काम 26:18; 2 कुरि. 4:4; इफ़ि. 2:2 से तुलना करें। जो विरोधी ताकते हैं, उनके बारे में उन्हें अनजान नहीं होना है। उन्हें यह जानना है कि मात्र याहवे की शक्ति लोगों को आज़ाद कर सकती और इसे हासिल करने के लिए परमेश्वर सत्य की शिक्षा का उपयोग कर सकते हैं।

3:1 "अन्त के दिनों"- याकूब 5:3; 1 पतर. 1:5; यहूदा 18 - इस युग के अन्त का समय। आरम्भ से ही भयंकर समय रहे हैं। और 2-4 पद के अनुसार लोग इस पृथ्वी पर रहे हैं। रोमि. 1:28-32 से तुलना करें। पौलुस का मतलब यह है कि दिन और बुरे हो जाएंगे और इस तरह के लोग पृथ्वी पर कलीसिया में दिखेंगे (पद 5)।

3:2-4 इन पदों में "प्रेमी" शब्द मुख्य है। इन भयानक समयों में खतरनाक लोग होंगे, लेकिन गलत बातों के प्रेमी उनका चरित्र परमेश्वर के वचन की सत्य शिक्षा के विरोध में होगा "वे अपने आप के प्रेमी होंगे"।

"स्वयं से प्रेम करने वाले"(पद 4) - 1 तीमु. 5:6; तीतुस 3:3; याकूब 4:3; 2 पतर. 2:13.

भलाई और सत्य, माता-पिता और पड़ोसी, और परमेश्वर के प्रति, वे बिना प्रेम के होंगे। पापमय बातें जो मज़ा देती है, उन्हें वे मसीह के कारण त्यागना नहीं चाहेंगे। धन के सम्बन्ध में आज्ञाकारिता को अपनाने और किसी बात को त्यागने में रूचि नहीं होगी। वे अपने रवैये और कामों से दिखा देंगे कि उन में परमेश्वर का प्रेम नहीं है (1 यूहन्ना 2:15-16; मत्ती 22:37-40; 1 कुरि. 13:1-3; 16:22.

इस कारणवश वे सब और दूसरी बुराईयाँ जिनका यहाँ वर्णन है उनके मन में भरी रहेंगी। वे इन पर घमण्ड करेंगे। उनके डाँटे जाने पर वे गाली देंगे। रोमि. 1:21 के समान उन में भी धन्यवाद नहीं होगा। दूसरों को माफ़ न करने से वे दिखाएंगे कि उनके भीतर सृजनहार की सी क्षमा नहीं है। विश्वासी लोग उन पर और उनकी बातों पर भरोसा न रख सकेंगे। हालाँकि वे आत्मिक रीति से अन्धे और अज्ञान होंगे वे सोचेंगे कि उन्हें सब आता है। वे सच्चे सिखाने वालों की न सुनेंगे।

"धन के लोभी"- लूका 16:14; 1 तीमु. 6:10 से तुलना करें।

3:5 "धर्मी दिखेंगे"- बाहर से वे मसीह के मानने वाले होंगे, भीतर से फाड़ खाने वाले भेड़िए (मत्ती 7:15)। दूसरे शब्दों में वे ढोंगी होंगे। वे भली भाषा का उपयोग करेंगे, किन्तु इसका अर्थ न जानेंगे। अपराधों से बचाने के सु-संदेश की ताकत को वे नहीं जानते (रोमि. 1:16) यह भी कि सुसमाचार की शक्ति लोगों को नया कैसे बनाती है (यूहन्ना 3:5-8)। इस सामर्थ को अपने जीवन में न जानते हुए, वे इसका इन्कार करते हैं।

"ऐसे लोगों से दूर रहना"- तुलना करें 2:21; मत्ती 18:17; 1 कुरि. 5:11,13; 2 कुरि. 6:17; 2 थिस्स. 3:6; तीतुस 3:10. पौलुस की यह सलाह कि ऐसे लोगों से बचे रहें यह दिखाती हैं, कि ऐसे लोग उन दिनों में थे। प्रत्येक पीढ़ी में ऐसे लोग हैं। ऐसा संभव है कि इस युग के अन्तिम समय में ऐसे लोग और अधिक होंगे (मत्ती 24:10-14; 2 थिस्स. 2:1-12)।

6इसी तरह के कुछ लोग उन मूर्ख स्त्रियों
के घरों में चालाकी से पहुँच कर उन को
अपने वश में कर लेते हैं, जो हर तरह की
दुष्टता से लदी और लालसाओं के वश में हैं।
7ये महिलाएँ कुछ न कुछ नया सीखती रहती
हैं, लेकिन सत्य को कभी नहीं पहचानती
हैं। 8जिस तरह से यन्नेस और जम्ब्रेस ने मूसा
का विरोध किया, उसी तरह से ये गंदे मन
वाले लोग सच्चाई का विरोध करते हैं और
जहाँ तक विश्वास का प्रश्न है, किसी काम
के नहीं। 9ऐसे लोगों को कोई सफ़लता
नहीं मिलेगी और जिस तरह से मूसा के
विरोधियों की मूर्खता सब के सामने आ
गयी, उनके साथ भी ऐसा ही होगा।

10किन्तु तुम ने मेरी शिक्षा, लक्ष्य,
विश्वास, धीरज, प्यार और सहनशीलता
को देखा है। 11अन्ताकिया, इकुनियुम
और लुस्त्रा में मुझे किन-किन सताव और
कठिनाईयों का सामना करना पड़ा? मैंने
क्या-क्या न सहा? लेकिन यीशु ने मुझे उन
सब से छुड़ा लिया। 12जो लोग यीशु मसीह
के होने के कारण खरा जीवन जीना चाहते
हैं, वे सताए जाएँगे। 13लेकिन दुष्ट और
धोखेबाज़ लोग बद से बदतर होते जाएँगे,
वे खुद धोखा खाते हुए दूसरों को भी उस
गड्ढे में ढकेलेंगे। 14परन्तु यह जानते हुए
कि तुम ने किससे शिक्षा पायी है, तुम्हें वह
सब करते रहना चाहिए, जो तुम ने मुझ से
सीखा है और यकीन किया है। 15बचपन
से तुम वचन (बाइबल) को जानते हो,

3:6 इन में से कुछ कपटी ऐसे लोगों की तलाश करेंगे जिन्हें धोखा दिया जाए या वश में किया जाए। उनकी आँखें कलीसिया (चर्च) की स्त्रियों पर लग जाएँगी। पुरूषों की तुलना में वे आसानी से फँस जाती हैं।

3:7 यह बहुतों की दुखद स्थिति है। वे बार-बार सत्य को सुनती हैं। ऐसा लगता है कि वे सत्य को चाहती भी हैं। किन्तु वास्तव में ऐसा नहीं है, इसलिए वे जो सुनती हैं, समझती नहीं। इसलिए सत्य के विरोधी उन्हें गुमराह कर देते हैं 2 थिस्स. 2:10)।

3:8 जैन्नेस और जैम्ब्रेस का नाम मात्र इसी स्थान पर आया है किन्तु मूसा के विरोध में हम निर्ग. 7:10,12,22 में पढ़ते हैं।

"गंदे मन वाले"- तीमु. 6:5

3:9 वे सत्य की कमी और शक्ति को सदा तक छुपा नहीं पाएंगे। जैन्नेस और जैम्ब्रेस की सच्चाई सब के सामने लायी गयी (निर्ग. 8:18)। इसी तरह से इन ढोंगियों के साथ होगा।

3:10 पौलुस स्वयं के लिए आदर और प्रशंसा नहीं चाह रहा था। वह इस प्रकार इसलिए कहता है क्योंकि वह जानता था कि जग के स्वामी ने उसे विश्वासियों और मसीह सेवकों के लिए एक नमूना बनाया ताकि वे और तीमु. उसके समान जीवन जिएं (पद 14; 1 कुरि. 11:1; फ़िलि. 3:17; 2 थिस्स. 3:7; प्रे.काम 20:18-35)

3:11 प्रे.काम 13:49—14:20; 2 कुरि. 11:23-27.

3:12 यूहन्ना 15:18-21; 16:33; प्रे.काम 14:22; 1 पतर. 4:1,12; रोमि. 8:17.

"मसीह के"- 1:9. सताव, एक स्थान का दूसरे स्थान से एक समय का दूसरे समय से, भिन्न हो सकता है। कभी-कभी शारीरिक दुःख और कभी-कभी तुच्छ ठहराया जाना एक दूसरे के बीच पक्षपात करने के रूप में हो सकता है। सभी विश्वासी कभी न कभी किसी रूप में इसका सामना करेंगे।

3:13 उनके पास बुरा उद्देश्य होता है और उसी ओर वे आगे बढ़ते हैं। बुराई से बुराई उत्पन्न होती है। दूसरों को धोखा देने से स्वयं सच्चाई को समझ पाना कठिन होता है।

3:14 पद 10; 1:13-14; 1 तीमु. 1:3.

3:15 "बचपन से"- 1:5 इसका अर्थ यह हो सकता हैं कि इसके पहले कि वे यीशु में विश्वास करने लगे, उन्हों ने उसे ओल्ड टेस्टामैन्ट (पवित्र वचन) सिखाया। व्यव. 6:6-7 के वचन को उन्हों ने गंभीरता से लिया था। क्या मसीही अभिभावकों को उस से कुछ कम करना चाहिए ? इफ़ि. 6:4.

"वचन"- ओल्ड टॅस्टामॅन्ट और न्यू टैस्टामॅन्ट मिलाकर हैं। ध्यान दें, यदि लोग ओल्ड टॅस्टामॅन्ट ठीक से समझें तो लोगों को मुक्ति के लिए बुद्धिमान बना सकता है। लूका 24:25-27,45-47; यूहन्ना 5:39,46 से तुलना करें।

जो तुम्हें मसीह यीशु पर विश्वास करके मुक्ति पाने के लिए अक्लमन्द बनाता है। 16पूरी बाइबल परमेश्वर के आत्मा की प्रेरणा से रची गई है। यह सिखाने, कायल करने, गलती सुधारने और सही कार्य करने की दिशा दिखाने के योग्य है, 17ताकि परमेश्वर का जन स्वयं मज़बूत हो एवं प्रत्येक अच्छे काम के लायक और तैयार हो।

4 परमेश्वर, यीशु मसीह जो दोबारा आकर मरे हुओं और जीवित लोगों का इन्साफ़ करेंगे और राज्य करेंगे, उनकी मौजूदगी में तुम्हें मैं यह आदेश देता हूँ, 2परमेश्वर का संदेश (वचन) सुनाओ, हर समय तैयार रहो। गलतियों का मुकाबला करो, लोगों को डाँटो, धीरज के साथ सिखाओ ताकि लोगों की हिम्मत बढ़े। 3एक समय आएगा, जब लोग सही शिक्षा को न सह सकेंगे, किन्तु अपनी पसन्द की बातों को सुनने और उन से सन्तुष्टि पाने के लिए ढेर सारे शिक्षकों को बटोर लेंगे। 4अपने कानों को सत्य से हटाकर वे अपना ध्यान खोखली कहानियों पर

"मसीह यीशु पर विश्वास"- ओल्ड टेस्टामैन्ट अपने आप में एक लक्ष्य नहीं है। पूरा प्रकाशन नहीं है। यह मसीह की ओर इशारा है और घोषणा करता है कि सभी यीशु पर विश्वास करें।

3:16 "पूरा पवित्र शास्त्र (बाइबल)" पुराने अनुवाद में शब्द "सभी शास्त्र" - आया है, जिससे कुछ लोग समझते थे कि सभी धमरें की धार्मिक पुस्तकें। 2 पतर. 1:2,21; मत्ती 4:4; 5:17-18; 15:3-4; 22:43; मरकुस 12:36; लूका 24:44; यूहन्ना 10:35; प्रे.काम 4:35; 1 कुरि. 2:13; इब्रा. 1:5-13; 1 पतर. 1:11; प्रका. 1:1; 2:1; 22:18-19. यिर्म. 1:2,9 से तुलना करें। न्यायियों की पुस्तक का परिचय भी देखें।

"परमेश्वर के आत्मा की प्रेरणा से"- या उन के श्वास फूँकने से। अपने भविष्यद्वक्ता सेवकों के मन में पालनहार ने अपने सत्य और विचारों को डाला। जो कुछ वह उन से लिखवाना चाहते थे, वह सब उनके दिलों में डाला और प्रेरणा दी। इसलिए वचन सर्वशक्तिमान द्वारा प्रेरित थे। एक दूसरे स्थान पर कहा गया है कि जो कुछ परमेश्वर के मुख से निकलता है उस से मनुष्य जीवित रहेगा।

परमेश्वर ने ऐसा क्यों किया। केवल इसलिए नहीं कि मनुष्य बाईबल की उपासना करे और उसे पवित्र जाने। बाईबल इसलिए दी गयी ताकि मनुष्य इसका उपयोग करे। चार तरीकों से यह लाभदायक है-परमेश्वर, मसीह, मनुष्य, मुक्ति के विषय सिखाने, दुष्टता और गलत शिक्षा के लिए डाँट और उन्हें सुधारने के लिए जो गुमराह हो जाते हैं। यह प्रशिक्षण देने के लिए कि गंदे संसार में खरा जीवन कैसे बिताएँ।

3:17 मसीह का कोई सेवक बिना बाईबल ज्ञान के किसी अच्छे कार्य के लिए योग्य नहीं बनाया जा सकता। हम दूसरी बातें सीख सकते हैं। हमारे जीवन का यह प्रमुख लक्ष्य होना चाहिए।

"प्रत्येक अच्छे काम के"- 2:21; इफ़ि. 4:11-13; इब्रा. 13:20-21.

4:1 पौलुस गंभीरता से कहता है। कुछ महत्वपूर्ण बातों के बारे में वह सिखा रहा है।

"दोबारा आकर"- पद 8; 1 तीमु. 6:14; तीतुस 2:13; इब्रा. 9:28.

"इन्साफ़"- यूहन्ना 5:27; प्रे.काम 17:31; रोमि. 2:16; 1 कुरि. 4:5; 2 कुरि. 5:10.

"राज्य"- मत्ती 4:17; 13:11; 19:28; 25:34; लूका 19:11-12; प्रे.काम 1:3,6.

4:2 "परमेश्वर का संदेश सुनाओ"- यहाँ पास्टरों, शिक्षकों और सुसमाचार सुनाने वालों के लिए एक बड़ा काम है (पृथ्वी पर इस से बड़ा कार्य और कोई नहीं)। उन्हें अपने मत या दूसरे के विचारों को नहीं बताना है। केवल याहवे का वचन उनका संदेश होना है। मत्ती 28:20; मरकुस 16:15; 1 कुरि. 1:23; 2:1-5; 2 कुरि. 4:5; 1 पतर. 4:11.

"हर समय"- मण्डली में या मण्डली के बाहर, सुविधा और असुविधा में।

"लोगों की डाँटो"- 3:16; 1 थिस्स. 3:2; 4:18; 1 तीमु. 5:20; तीतुस 1:9,13; 2:15; इब्रा. 3:13; 10:25.

"धीरज...बढ़े"- 2:24-25.

4:3-4 3:1; 1 तीमु. 4:1 देखें।

"सही शिक्षा"- 1:13; 1 तीमु. 1:10-11; 6:3; तीतुस 1:9; 2:1.

"सन्तुष्टि पाने के लिए"- ऐसे लोग वह सब करना और सुनना मांगते हैं, जो वे चाहते हैं।

लगाएँगे। 5तुम सब बातों में सचेत रहो, दुख उठाओ, दूसरों तक सुसमाचार पहुँचाने का काम करते हुए अपनी सेवा को पूरा करो।

6मैं उण्डेले जाने वाली भेंट की तरह हूँ और इस पृथ्वी पर से मेरे जाने का समय आ गया है। 7मैंने प्रतियोगिता (कुश्ती) में पूरे तन मन से भाग लिया है। मैंने अपनी दौड़ पूरी कर ली है और विश्वास की रक्षा की है। 8धार्मिकता का वह मुकुट मेरे और उन सब के लिए रखा है जिसे, सच्चे जज (न्यायी) यीशु मुझे देंगे और केवल मुझे ही नहीं बल्कि यीशु के आने की चाहत रखने वाले सभी लोगों को उस दिन देंगे।

9मेरे पास जल्दी आ जाओ। 10आज की दुनिया की मोह-माया की चाहत की वजह सेदेमास मुझे छोड़ कर, थिस्सलुनीके चला गया है। क्रेसेंस गलतिया चला गया है तथा तीतुस दलमतिया। 11मात्र लूका मेरे साथ है। मरकुस को अपने साथ ले आओ, क्योंकि सेवकाई में वह मेरे लिए मददगार है। 12तुखिकुस को मैंने इफ़िसुस

उनका प्रश्न यह नहीं कि सच्चाई क्या है? लेकिन किस बात से उन्हें मज़ा आता है। वे सत्य को नहीं चाहते क्योंकि सत्य से, उनके जीवन शैली की निन्दा होती है और उनके तरीके मे अड़चन आती है। इसलिए वे सत्य से वापस अँधेरे में जाते हैं। यही उनका बड़ा अपराध और दोष है - यूहन्ना 3:18-20 मुक्ति पाने के लिए हमे सब से अधिक सत्य की ज़रूरत है। किन्तु ये लोग इसे नहीं चाहते। देखें 2 थिस्स. 2:10-12. 1 तीमु. 1:4; 4:7; तीतुस 2:14.

"शिक्षकों"- हालांकि तीमु. एक पास्टर शिक्षक था, अपनी सेवा द्वारा उसे लोगों को जीतना भी था।

4:5 "दुख उठाओ"- 2:3.

4:6 "उण्डेले जाने वाली भेंट"- फ़िलि. 2:17.

"मेरे जाने का समय"- यीशु ने उसे यह बता दिया था।

4:7 "प्रतियोगिता (कुश्ती)"- 1 कुरि. 9:26; 2 कुरि. 10:4; 1 तीमु. 1:18; 6:12; इफ़ि. 6:10-18.

"दौड़"- 1 कुरि. 9:24; गल. 2:2; 5:7; फ़िलि. 3:13-14; इब्रा. 12:1; प्रे.काम 20:24 में जो उसका लक्ष्य था, वह पूरा हुआ।

"विश्वास"- विश्वास के लिए नींव के रूप में जिस सत्य को परमेश्वर ने दिया था। यह उसे सौंपा गया था। 1 कुरि. 4:1; इफ़ि. 3:2-9)। उसने उसे बना कर रखा - अपने विश्वास के लक्ष्य और जीवन के एक नियम के रूप में और एक प्रबंधक के रूप में ताकि दूसरों को दे सके। इसलिए कि उसने यह ईमानदारी से किया था, अपने जाने के विषय में खुश था।

4:8 "मुकुट"- यहाँ यूनानी शब्द (और 1 कुरि. 9:25 में; फ़िलि. 4:1; 1 थिस्स. 2:19; याकूब 1:12; 1 पतर. 5:4; प्रका. 2:10; 3:11) आदि में जो उपयोग किया गया है। राजाओं के मुकुट की बात नहीं कर रहा है। यह एक पत्तियों से बनी माला हुआ करती थी, जो उन दिनों प्रतियोगिता में जीतने वालों को दी जाती थी। अपनी दौड़ के अन्त में पौलुस उसी की प्रतीक्षा में था। 1 कुरि. 9:25 से तुलना करें। धार्मिकता के मुकुट का अर्थ है, एक मुकुट जो खरे जीवन जीने से मिलता हैं। अधार्मिकता के विरोध में लड़ने, अच्छी दौड़ दौड़ने और खरे विश्वास को बनाए रखने से यह मिलता है। मुकुट के सम्बन्ध में ऊपर दिए पदों को देखें।

"आने की चाहत रखने वाले"- धार्मिकता के मुकुट और मसीह के आने की प्रतीक्षा करने वाले में क्या सम्बन्ध है। जो खरा जीवन जी रहे हैं, वे मसीह के दोबारा आने का इन्तज़ार करते है। जो उनके आने की प्रतीक्षा में हैं, वे अपने आपको शुध्द करेंगे। देखें 1 यूहन्ना 3:2-3. उनके आने के विषय में सिखाना काफ़ी नहीं है। धार्मिकता के मुकुट का प्राप्त करने का अर्थ, हमें उसे बहुत चाहना है।

"उस दिन"- 1:12,18; 2 थिस्स. 1:10.

4:10 "आज...से"- किसी के बारे में यह कहा जाना दुःख की बात है। 1 यूहन्ना 2:15-17.

4:11 "लूका"- कुल. 4:14; फिले. 24.

"मरकुस"- प्रे.काम 12:25; 13:5,13; 15:37,39; 1 पतर. 5:13. अपनी असफ़लता के बाद भी मरकुस विश्वासयोग्य रहा। यह अच्छी बात है कि हमारी हार के बावजूद जग के स्वामी हमको छोड़ते नहीं, किन्तु हम में और हमारे साथ कार्य कर के हम में बेहतर बनाते हैं।

भेज दिया है। 13त्रोआस में कार्पुस के घर
पर मेरा चोगा, किताबें तथा नोट्स (लेख)
विशेषकर "पार्चमॅन्ट" छूट गए थे, आते
समय वह सब ले आना।

14एलेक्ज़ेन्डर ठठेरे ने मेरी बहुत हानि
की थी। उसकी करतूतों को मैंने परमेश्वर
को सौंप दिया है। 15तुम भी उससे सम्भल
कर रहना, क्योंकि उसने हमारे वचन
का डट कर विरोध किया था। 16मेरी
पेशी के समय, किसी ने मेरा साथ नहीं
दिया, मुझे अकेला छोड़ दिया था। मैं
प्रार्थना करता हूँ कि परमेश्वर उन सभी
को माफ़ करें। 17फिर भी यीशु मेरी ओर
थे और उन्हों ने मुझे हिम्मत दी, ताकि
मेरे द्वारा पूरा-पूरा प्रचार हो, और सभी
गैरयहूदियों तक संदेश पहुँचे। मैं शेर
के मुँह से छुड़ा लिया गया था। 18यीशु
मुझे हर एक बुरे हमले (योजना) से
छुड़ाकर अपने स्वर्गिक राज्य के लिए
सुरक्षित रखेंगे।

19युगानुयुग उन्हीं को महिमा मिले। ऐसा
ही हो। उनेसिफ़ोरस के घराने, प्रिस्का और
अक्विला को सलाम। 20इरास्तुस कुरिन्थुस
ही में रह गया था, लेकिन त्रुफ़िमुस
को बीमारी की हालत में मैंने मिलेतुस
में छोड़ा है। 21सर्दी शुरू होने से पहले
आने की कोशिश करना। यहाँ यूबुलुस,
पुदेंस, लायनस, क्लोदिया और दूसरे सभी
विश्वासी सलाम कहते हैं।

22प्रभु यीशु तुम्हारी आत्मा के साथ
हों और परमेश्वर की असीम कृपा भी।
ऐसा ही हो।

4:13 "पार्चमॅन्ट"- स्क्रौल पैपायरस पौधे से और पार्चमैन्ट, पशुओं की खाल से बनाए जाते थे। 4-14,15-1:15;2:17; 1 तीमु. 1:20.

4:16 "साथ"- वह जेल में था अदालत में पेश होना था। प्रेरित 24 से तुलना करें।

"साथ नहीं दिया"- 1:15 लूका उस समय वहाँ नहीं था। ऐसा संभव नहीं था, कि उसे छोड़ दिया गया हो।

4:17 यीशु के सेवकों को लोग छोड़ सकते हैं लेकिन, यीशु नहीं छोड़ते इब्रा. 13:5-6.

"हिम्मत"- यशा. 40:29-31. प्रे.काम 18:9-10 से तुलना करें।

"पहुँचे"- शायद पौलुस की ओर इशारा कर रहा था, जिन्होंने वहाँ गैर यहूदियों के साथ उसके मुकदमें की कारवाई की थी। संदेश देने के लिए यीशु ने उसे साहस दिया था। मत्ती 10:17-20; मरकुस 13:9; लूका 21:12-15; प्रे. काम 26:19-23 से तुलना करे।

"शेर के मुँह से"- इसका अर्थ भयंकर खतरे से था। यह नहीं मालूम कि शारीरिक या आत्मिक खतरा।

4:18 "छुड़ाकर"- उसका मतलब यह नहीं था कि उसकी मृत्यु का समय निकट आया है - पद 6. किन्तु वह निश्चित था, कि यीशु उसे प्रत्येक खतरे (हमले) से बचाएँगे और अपने समय में स्वर्ग बुला लेंगे। तुलना करें मत्ती 6:13.

4:19 "प्रिस्का और अक्विला"- प्रे.काम 18:2,18,19,26; रोमि. 16:3.

4:21 पद 9,13. उस क्षेत्र में शीतकाल बहुत भीषण हो सकता है।

4:22 पौलुस द्वारा लिखे ये आखिरी शब्द हैं। अपनी सेवकाई के दो मुख्य विषयों को वह दोहराता है - यीशु मसीह की उनके लोगों के साथ उपस्थिति और स्वर्गिक पिता परमेश्वर की शर्तहीन दया जो बचाती, संभालती और आशीष देती है।